भगवत् कृपा

THE DIVINE GRACE

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली मासिक सत्संग पत्रिका

वर्ष 19 अंक : 5	सम्पादक : **प्रभाकर राव**	वार्षिक चन्दा : 50.00
रविवार 26/5/96	मई-1996	प्रति अंक : 5.00

निमन्त्रण पत्र

आईये, मंदिर के प्रांगण में–

दिनांक 8-6-96, शनिवार सायं - 7.00 से 9.00

'अनिर्देश' की–

अनोखी, दिव्य विभूति–चैतन्यशिल्पी

प.पू. काकाजी महाराज का

78वां प्राकट्यदिन मनाकर अपनी भक्ति अदा करें और स्वयं को धन्य करें.....

बांझ भक्ति !

..... हमारे काम-ऑफिस पू. बापा चलाते हैं, सो खूब ध्यान रखना और भजन-सच्चाई से, प्रार्थना पूर्वक, हैसियत मुतबिक, समझकर करते रहना। प्रभुजी जरूर सफलता देकर (लक्ष्मी के ढेर) करेंगे। सो, भजन और सत्संग में कसर नहीं रहे, वह सत्पुरुष से समझकर टालनी चाहिए। उसके बिना भक्ति बांझ गिनी जाए–यही रहस्य है। वच. म. 45 अं. 16-21, प्र-14, म. 31 पढ़ना और मनन करना।

– प.पू. काकाजी महाराज

'निर्दोषबुद्धि' व 'मैत्रीभाव' के सम्राट का प्रागट्यदिन..... 12 जून

ओहो काकाजी ! यह शब्द सुनते ही, उनकी अलमस्त मूर्ति की स्मृति करते ही जैसे पूरा तंत्र रोमांचित हो जाता है। संबंध में आने वालों को प्रथम दर्शन में ही जैसे अक्षरधाम की अनोखी दिव्यता का अनुभव होता था। प.पू. काकाजी यानि एक युगसृष्टा, क्रांतिकारी विचारक, परम भागवत् संत, हृदयस्पर्शी योगी और जीवन को सर्जनात्मक दृष्टिकोण से देखने वाली एक महान विभूति.....

प.पू. ककाजी के समग्र जीवन को यदि एक ही वाक्य में देना चाहें तो—वे योगी के लिए-योगी के होकर जीये और योगीरूप ही बन गए... उन्होंने परब्रह्म तत्व को अखंड धारकर ब्रह्मस्वरूप अवस्था में—सहज समाधि में रहकर इस पृथ्वी पर जीवंत साधना का मार्ग खुल्ला किया.... स्वयं मानव कक्षा पर ही वर्तकर जीव-प्राणी मात्र कर करूणा बरसाई, हमेशा सब का हित ही चाहा... सबको अपने माने और सब के सुहृद बने व मैत्रीभाव का मंत्र दिया और सबके हृदय को जीतने के लिए प्रेम के शस्त्र का ही उपयोग किया... व्यावहारिक-आध्यात्मिक सूझ दी।

काकाजी-स्वरूपनिष्ठा का मूर्तिमान स्वरूप.... संबंध वालों के सुहृद् और योगीजी महाराज के दास ! सब के दुःखों में भागीदर बनने खूब तत्परता और सभी को अक्षरधाम का सुख देने की उमंग.... जैसे मानव देह में 'हृदय' की धड़कन है, वैसे ही गुणातीत समाज में निर्दोषबुद्धि और मैत्रीभाव की धड़कन प.पू. काकाजी ने भरी। यदि गहराई से सोचेंगे तो प.पू. काकाजी ने हम सभी के साथ one way traffic ही रखा... बक्षीश में कल्याण-संबंध में आने वालों के लिए मौजरूप योजना खुले मैदान में रख दी.. ना देखी हमारी गरज, ना देखी पात्रता, ना देखी श्रद्धा, ना देखी हमारी कोई लायकात ! बस संबंध देखकर हम सब पर करुणा बरसा दी। **योगी के संबंध वालों** को माथे का मुकुट माना और **उनकी खुशी में नाचे।**

दिव्य-अनुपम अक्षरधाम की ज्ञानसमाधि में अखंड रहते हुए, सुख सामर्थ्य और ऐश्वर्यों के मालिक होते हुए गुरुहरि योगीजी महाराज के प्रति प.पू. काकाजी का स्वामीसेवकभाव विरल था... आध्यात्मिकता total श्रद्धा व विश्वास का विषय है-बुद्धि व logic का नहीं...वह प.पू. काकाजी ने स्वयं जीकर बताया। आध्यात्मिकता के पूर्णशिखर पर होते हुए भी अजोड़ सरलता व विनम्रता गुरुहरि योगीबापा के पास ही नहीं, बल्कि अल्प संबंध वालों के प्रति रखी। साथ ही साथ प.पू. पप्पाजी, प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी, प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी, प.पू. साहेब तथा सभी गुणातीत स्वरूपों के प्रति आदरभाव, आंतरिक दासभाव रखना-यह प.पू. काकाजी की असली गुणातीत रीति-नीति व स्थिति का हमें सम्यक् दर्शन कराता था.... हम सभी में अभेददृष्टि से जीवन जीने के बीज उन्होंने ही डाले।

किसी भी मुमुक्षु को बिना अवरोध अग्रसर होने अनेक रास्ते, उपायों और formulae प.पू. काकाजी सतत् देते ही रहे। रोजाना कारोबार में भी सरलता रहे और मुश्किल से मुश्किल उलझन भी खूब ही आासन और सरल बनाने की अनेक रीतें, अनेक formulae प.पू. काकाजी ने बताए। शास्त्रों के गहन सिद्धान्त व साधकों को पहाड़ जैसे अत्यधिक कठिन लगते साधना के रास्तों को, उलझनों को केवल अनुग्रह से सब के लिए सरल बनाया। प.पू. काकाजी की परावाणी का **एक-एक शब्द rejuvenating—जीव का कायाकल्प करने वाला था।** प.पू. काकाजी द्वारा बताई रीत से यदि भावनापूर्वक, दिल की सच्चाई से-भजन करने का अभ्यास करके आदत ही बना देंगे तो प्रभु की शक्ति को भीतर में अनुभव करेंगे... भीतर में नए प्रकार की अनुभूति होगी। नियमितरूप से दो बार किए ऐसे भजन-स्वरूपयोग के फलस्वरूप काल, कर्म, माया से हमारी रक्षा होगी... भीतर के शत्रुओं से लड़ने का अमाप बल मिलेगा और आंतरिक व बाहरी कुरुक्षेत्र का अंत पाकर देह रहते अक्षरधम के सुख, शांति, आनंद अनुभव करेंगे। पू. दिनकरभाई के शब्दों में—'' this Process is extremely effective and brings instantaneous result on our conscious level, in our mental condition of conflict, confusions and chaos. It is definate, you feel yourself spiritually reborned. यूं स्वरूपयोग करते हुए मन में जो दूसरे विचार का संकल्प आए, उन सभी से अपने आपको भिन्न समझकर (मन भले ही मन का काम करे)—अलग मानकर, उनसे दृढ़ता से अलिप्त होकर भजन-धून में ही मन को लगाये रखना। गुणातीत स्वरूपों के गुण, चरित्र और स्मृतियों में मन लगाये रखना। गुणातीत सत्पुरुषों के माहात्म्य-करुणा का विचार करना। उच्च स्वर से लज्जा छोड़कर स्वामिनारायण-स्वामिनारायण मंत्र का जाप तालियां बजा कर करना। उसमें समुद्र की लहरों के समान उठते संकल्प टल जाते हैं।

फिर भी-अनेक मुमुक्षुओं को कई बार प्रश्न उठता है कि जब भी हम भजन, ध्यान, प्रार्थना करने बैठते हैं, तब ही हमारे मन में ना जाने कहां-कहां से संकल्प-विकल्प आकर छा जाते हैं। हमारी एकाग्रता में बाधा डालते हैं। तो भगवान का—स्वरूपों का भजन-स्मरण एकाग्रता से करने का सरल उपाय प.पू. काकाजी ने बताया है... देखा जाए तो उस समय प.पू. काकाजी द्वारा दिए सचोट उपायों को, उनकी ही बातों को—शब्दों को हमने ध्यान से सुना ही नहीं, बेपरवाह जैसे रहे। जबकि उनकी परावाणी तो पूरे व्यक्तित्व को झकझोरने

वाली, जगाने वाली थी... दो टाइम 'स्वरूपयोग' अचूक करो ही-यह वाक्य हज़ारों बार हमने उनकी परावाणी में सुना... पर, असल में 'स्वरूपयोग' का सही अर्थ क्या है? वह भी जानने की उत्सुकता-इच्छा नहीं रखी.... फिर भी वे आसान से आसान techniques बताते रहे... 'स्वरूपयोग' का सही अर्थ **प.पू. काकाजी** ने अपनी एक कथावार्ता दौरान बताया, जो निम्नलिखित है–

स्वरूपयोग

ध्यान करते समय स्वरूप के साथ योग करना, यही 'स्वरूपयोग' सभी योगों को राजा है। बोलती-चलती निर्गुण मूर्ति का तुम्हें एक बार अनुभव हो जाए, बाद में भावना से बिना आंखों के उन्हें निहारें, बिना छुए उन्हें स्पर्श करें, बिना उनके बोल बोले उन्हें सुनें-ऐसा पांच ही मिनट यदि एकाग्रचित्त से ध्यान करें तो इन्द्रियां-अंतःकरण पिघल जाएंगे। सो, ध्यान mechanical ना हो जाए, इसलिए उत्तरोत्तर अधिक से अधिक मन के बगैर उन्हें पकड़ो।

आंख, कान, मुंह, बंद कर लो और भीतर में जहां धबक-धबक धड़कन चलती है, वहां प्रभु बैठे हैं। दूसरों के (दोष-स्वभाव-प्रकृति) देखे बिना उन्हें (प्रभु को) हृदय में धारो। जब तक प्रकाश ना हो, तब तक आंख, कान, मुंह, बुद्धि बंद रखकर ध्यान करो। **गुणातीत पुरुष के सम्मुख बैठकर ध्यान करो–वह आठ आवरण के पार की बात है।**

हमने इन गुणातीत पुरुषों को देखा। पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश, प्रधानपुरुष, प्रकृतिपुरुष से पर के ये स्वरूप ! पर हम उन्हें ऐसा मानते नहीं हैं। अत्यधिक बड़े पुरुष को यदि निष्कामी मानो, निर्लोभी-निर्मानी मानो, तो ऐसे ही बन जायेंगे। साधन से नहीं होगा। **परम पवित्र पुरुष मिले हैं और तुम ऐसे नहीं बने, तो (मानना कि) तुम्हारे मन में (उनके प्रति) मायिकभाव रहा है। यह टालने, कोई दो जनों के साथ तुम रस बस हो जाओ। स्वरूप के साथ चाहे कितने ही जुड़े होओगे, परन्तु रूपांतर के लिए इतने से ही नहीं चलेगा।** गुणातीतानंदस्वामी की चाहे कितने ही सेवा करी, परन्तु भगतजी महाराज और जागास्वामी नहीं पहचाने गये तो निकम्मा हो गया न सब? गुणातीत की सेवा करने वाले बहुत थे। पर, शास्त्रीजी महाराज ने कहा-भगतजी में महाराज प्रकट हैं। स्थितिवाला ही स्थिति वाले को पहचान सकता है। तुम्हारी चेतना को दूसरों की चेतना का पता चल जाए, इस भूमिका में जाना है।

अब, इन **गुणातीत पुरुषों की हाज़िरी में बैठकर इन्हें आंखों से नहीं देखना, आंखें बंद करके देखने का प्रयत्न करना। कान बंद करके, मन से इनकी वाणी सुनना। वह चैतन्यमय वाणी होती है। हमारे अंतर में इन्द्रियां-अंतःकरण के जो भाव बाधारूप होते हैं, उन्हें निकालने वे बोल रहे होते हैं।** एक ही वचनामृत जितनी बार समझायें, उतनी बार अलग अर्थ होता है। सुनने वाले की जैसी अवस्था और स्थिति होती है, ऐसी बातें करते हैं और **हर एक को बता देते हैं कि तू यहां है और यह मायिकभाव तुझे बाधारूप बन रहा है।**

आज ऐसी प्राप्ति हुई है, तो तुम **बड़े पुरुष को अंतर की आंखों से देखना, तो मजा आयेगा। बाक़ी चाहे कितना ही साथ में रहोगे, परन्तु गुणातीत ज्ञान समझने में फर्क रह जायेगा।** वह ना रहे, इसकी ट्रेनिंग लेनी पड़ेगी।

तुम से तीन देह, तीन अवस्था और तीन गुण पर होकर वर्ता नहीं जायेगा। रोम-रोम में जहां देहाध्यास है– सूक्ष्म में नहीं, तो कारण में और कारण में नहीं, तो महाकारण में-कहां तुम जीत पाओगे? **पर तुम जिस सत्पुरुष के जोग में हो, उससे तनिक भी पर्दा नहीं रखना। सो, खुल्ले रहो और खाली होकर यहां आना। ये दिव्य पुरुष ब्रह्मरस भर देंगे।**

महाराज की 200वीं जयंती पर हमें यह उठाव लेना है। शास्त्रीजी महाराज व योगीजी महाराज की पहचान देनी है। तुम **हर रोज प्रायश्चितरूप प्रार्थना करना। पश्चाताप नहीं, कर लेने के बाद नहीं, पर प्रायश्चितरूप प्रार्थना करोगे तो सूझ पड़ जायेगी-प्रकाश हो जायेगा। हम सब गुणातीत के गुनहगार हैं कि आखिर तक उनमें मायिकभाव ही रहा। दीवार के पार का तो हमें सूझता नहीं और चौधरी बनते हैं। आज पप्पाजी व स्वामिजी जैसे पुरुष के पास तुम्हारी बुद्धि मत लगाना, उनकी हर क्रिया व स्वभाव सब कुछ total कल्याणकारी ही है।**

गुणातीत समाज का बगीचा खिल उठा है, वह **व्यापक बनने वाला है।** वैभवशाली सत्संग होगा, पर गुणातीत समाज प्रभावशाली बन रहा है। **तुम जहां जाओ, वहां (तुम्हारा) प्रभाव पड़े। तुम्हारे संबंध में आए, उसका जगत टल जाए, उसके प्रारब्ध धुल जाएं। हमें तो अहोहोभाव और सुहृदभाव दो रखने। उससे भगवान धारते हो जायेंगे। मूर्ति में रहना यानि–यह जाग्रतता रखकर मन के ठहरावमात्र ठुकरा देने और एक ठहराव प्रह्लादजी की भांति चिपके रहने का रखेंगे तो प्रकाश हो जायेगा।** तो, महाराज व स्वामी सभी को ऐसा बल दें। **'हम सब एक'– यह मंत्र सभी को सिद्ध हो, इतनी ही प्रार्थना।**

तो आईये, हम सभी प.पू. काकाजी की जयंती के पवित्र अवसर पर दिन में दो बार नियमितरूप से यूं **'स्वरूपयोग'** करने का संकल्प करके अपने प्रभु की सही अर्थ में 'सच्ची' जयंती मनायें.....

***

ब्रह्मप्रवाह

कम्पाला 9.11.'59

अल्प संबंध वाला भी माथे का मुकुट

प.भ.

सुबह की ज्ञानवार्ता

सुबह के 5.30 बजे पू. रणछोड़भाई, केशवलाल भाई, पू. संतस्वामी तथा मैं और अरुण वगैरह हाज़िर थे। पू. स्वामिजी (गुरुहरि योगीजी महाराज) **दिन में एक बार निर्दोषबुद्धि पर ही बात करते हैं** और नए-नए अर्थ करते हैं। कल भी वही बात करी थी। अब सभी हरिभक्तों में भी दिव्यभाव लाना ही चाहिए, ऐसी निर्दोषबुद्धि दृढ़ करनी-इस पर ज़ोर दिया था। फिर खुद ही प्रश्न पूछा कि–'ऐसा क्यों होता नहीं?'

खुद ही उसका उत्तर किया कि–**'बड़े पुरुष का सभी प्रकार से, निर्दोषभाव से, महिमा जान कर सेवन करें तो तत्काल निर्दोषबुद्धि हो जाए और कसनी सहते हैं, लेकिन गुण नहीं लेते (सद्भाव नहीं रखते) सो, किया निरर्थक हो जाता है।'** अतः सच में निर्दोषबुद्धि तो वह कि-कसनी में आए, फिर भी अखंड दिव्यभाव ही रहा करे तथा हरिभक्तों की महिमासहित सेवा होती ही रहे। सो, दत्तात्रय जैसी निर्दोषबुद्धि हो सके ऐसा है, क्योंकि हर एक का गुण ही ग्रहण किया। पशु-पक्षी कई-कितने थे, तो भी उनका गुण लिया और वैसी उद्धवजी की भी निर्दोषबुद्धि थी। इस गुणातीत ज्ञान में तो इससे भी आगे बढ़ना पड़े। **मनमानी छुड़वा दें, कसनी में लें और तब भी किसी भी संबंध वाले–लगाव वाले हरिभक्त का ज़रा-सा भी अभाव अवगुण न लें, तब** सच में **निर्दोषबुद्धि** हुई मानी जाए।

तब ही धाम के पुरुष निर्गुण माने कहे जाएं। जब तक मनुष्यभाव आड़े आता है, **इतना ठीक नहीं हुआ और ऐसा करा होता तो अच्छा रहता-यह हमने उन्हें सर्वज्ञ नहीं माना।** वे जो करते होंगे, सभी के भले के लिए, अच्छे के लिए ही होता है, यूं देखने की आदत डालनी-वही निर्गुण दृष्टि है। **सभानता रहती है लेकिन अखंड नहीं रहती,** उसका अभ्यास रखना। जो पुरुष मिले हैं, वे एक ब्रह्मांड जितने–सौ ब्रह्मांड जितना लाभ न गिना जाए। (मतलब-उससे अधिक हैं) क्योंकि कोटिकल्प तक परिश्रम करें, तब भी ऐसे सत्पुरुष का संबंध नहीं हो पाता, तो फिर-खुशी-खुशी सेवा में तो जुड़ा ही कैसे जाए?

सो, कर-करके इतना ही करना है... जो प्राप्ति हुई है, वह सर्वोपरि प्राप्ति की जीव में दृढ़ता हो जानी चाहिए और महाराज की मूर्ति के बिना कोई भी इच्छा अंतर में रहे नहीं, ऐसा आखिर जन्म कर लेना है....

लि. दादुभाई के हेतपूर्वक जय श्री स्वामिनारायण !

✡ ✡ ✡ ✡ ✡

स्वामी की बातें

510 एक के मंडल में लड्डू की रसोई बने और एक के मंडल में नहीं हो। वह एक गुण आया और अंखड ध्यान करे, वह भी एक गुण आया व त्रेसठ गुण बाकी रहे। परन्तु, किसी प्रकार से **साधु की पहचान हो जाए, तो उसमें सभी गुण आ जाए।** *प्र-5,343*

511 गोपालस्वामी के पास साठ साधु थे। उनमें से चार साधु देने के लिए कहा, तब बोले कि मेरे पास साधु तो दो ही हैं ! *प्र-5,344*

512 सच में जीव सौंपकर, उसके होकर रहें तो सिंह का माल गीदड़ खा नहीं पायेगा। *प्र-5,345*

513 जैसे हैं, वैसे पहचानने कठिन हैं और पहचाने गए तो समागम में रहना कठिन है व समागम में रहे तो जीव सौंपकर अनुवृत्ति में रहना कठिन है। दो आने भी किसी का पक्ष रह जाये। *प्र-5,347*

व्रतोत्सवसूची

1. दि.	28.5.96	मंगलवार	भगवान स्वामिनारायण का स्वधामगमन दिन
2. दि.	29.5.96	बुधवार	भीम एकादशी, निर्जला व्रत
3. दि.	1.6.96	शनिवार	प.पू. पप्पाजी का दृष्टा दिन, गुणातीत ज्योत स्थापना दिन
4. दि.	11.6.96	मंगलवार	एकादशी, व्रत
5. दि.	12.6.96	बुधवार	ब्रह्मस्वरूप प.पू. काकाजी महाराज का प्राकट्यदिनः जो कि 8.6.96 शनिवार को मनाया जायेगा।
6. दि.	16.6.96	रविवार	'अनिर्देश' में एक महीने के 'जपयज्ञ' की पूर्णाहुति सुबह 6.30 से 9.00

PUBLISHED BY SHRI PRABHAKAR RAO *FOR* YOGI DIVINE SOCIETY
'Anirdesh', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-110 052 (India) Tel.: 7229327, 7249327
Printed By : Chowdhary Mudran Kendra, 714/200 Shri Ram marg, South Maujpur, Delhi-110 053